DR.KOMAL VERMA

ASSISTANT PROFESSOR GUEST

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

LECTURE NO 40

B.A PART IST PAPER IST

कुशासन और भ्रष्टाचार के आरोप की नीति

लॉर्ड डलहौजी की इस नीति का शिकार अवध का नवाब और हैदराबाद का निजाम हुआ।

(1) बरार-

बरार क्षेत्र **हैदराबाद** के निजाम के नियन्त्रण में था, उसे बहुतसी धनराशि सहायक सेना के भरण-पोषण के लिए देनी थी। 1853 ई. में उसे धन के बदले बरार का प्रदेश देने के लिए बाध्य किया गया।

(2) अवध-

लॉर्ड डलहौजी ने अवध को अंग्रेजी साम्राज्य में विलय करने की योजना बनाई। 1848 ई. में उसने कर्नल स्लीमैन को लखनऊ में रेजीडेण्ट के रूप में भेजा। स्लीमैन ने कुशासन के विस्तृत विवरण डलहौजी को भेजे। 1854 ई. में स्लीमैन के स्थान पर आउट्रम भारत आया और उसने भी अपने विवरण में कहा कि अवध का प्रशासन बहुत दूषित है तथा लोगों की दशा बहुत शोचनीय है। उसने अवध के नवाब वाजिदअली शाह पर अयोग्यता तथा दोषपूर्ण शासन करने का आरोप लगाया और एक सन्धि स्वीकार करने का प्रस्ताव रखा, जिसके अनुसार नवाब को ₹ 12 लाख वार्षिक पेंशन देकर अवध राज्य को अंग्रेजी साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया जाता। किन्तु नवाब ने इस सन्धि को स्वीकार नहीं किया। फलतः **लॉर्ड डलहौजी** ने एक सेना अवध भेजी और नवाब को गद्दी से उतारकर अवध पर अधिकार कर लिया। 13 फरवरी, 1856 की एक घोषणा के अनुसार अवध का राज्य कम्पनी के राज्य में मिला लिया गया।

पेंशन और पदों की समाप्ति की नीति

कम्पनी जिन राज्यों को अपने शासन में सम्मिलित करती थी, वहाँ के शासकों को वह पेंशन देती थी। **लॉर्ड डलहौजी** ने इन पेंशनों को बन्द कर दिया। 1853 ई. में कर्नाटक के नवाब की मृत्यु हो गई। डलहौजी ने मद्रास सरकार के सुझाव से सहमत होकर उसके उत्तराधिकारियों को मान्यता नहीं दी और उसके वंशजों का राजपद समाप्त कर दिया। पेशवा बाजीराव द्वितीय को ₹ 8 लाख वार्षिक पेंशन मिलती थी। 1853 ई. में उसकी मृत्यु हो जाने पर यह पेंशन उसके दत्तक पुत्र नाना साहब को नहीं दी गई।

1855 ई. में तंजौर के राजा की मृत्यु हो गई। उसके पश्चात् उसकी सोलह विधवा रानियाँ और दो बेटियाँ रह गईं। डलहौजी ने उनकी उपाधि को समाप्त कर दिया। इसी प्रकार **डलहौजी** मुगल सम्राट् की उपाधि भी समाप्त करना चाहता था, किन्तु कम्पनी के संचालकों ने उसके इस सुझाव को स्वीकार नहीं किया।

युद्ध और आक्रमण की नीति

(1) द्वितीय आंग्ल-

सिक्ख युद्ध द्वारा पंजाब का विलय-मुल्तान के सिपाहियों ने अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी। हजारा के सिक्ख गवर्नर ने भी विद्रोह का झण्डा फहराया। सिक्खों ने पेशावर अफगानिस्तान के अमीर दोस्त मुहम्मद को दे दिया और उसकी मित्रता प्राप्त कर ली। बहुत-से सिक्ख शासक मूलराज के झण्डे तले एकत्रित हो गए। इधर शेर सिंह ने घोषणा की कि रानी झिन्दन को बन्दी बनाकर अंग्रेजों ने सिक्खों का अपमान किया है। उसने 31 अक्टूबर को पेशावर जीत लिया। लेकिन 22 जनवरी तक अंग्रेजों ने मुल्तान जीत लिया और मूलराज ने आत्म-समर्पण कर दिया। शेर सिंह, छतरसिंह एवं अन्य सिक्ख सरदारों ने भी 12 मार्च, 1849 तक आत्म-समर्पण कर दिया। 29 मार्च, 1849 को पंजाब का अंग्रेजी साम्राज्य में विलय कर लिया गया। सन्धि के अनुसार महाराजा दिलीप सिंह को पेंशन दी गई और अंग्रेजों ने शासन सँभाल लिया।

(2) सिक्किम-

सिक्किम के राजा ने दो अंग्रेज अधिकारियों को कैद कर लिया। उस पर दुर्व्यवहार का आरोप लगाकर अंग्रेजों ने सिक्किम को 1850 ई. में अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया।

मूल्यांकन -

सर रिचर्ड टेम्पल का कथन है, "**एक साम्राज्यवादी प्रशासक के रूप में जो योग्य व्यक्ति इंग्लैण्ड ने भारत भेजे, उनमें से किसी ने भी कदाचित ही उसकी समानता की है, अतिक्रमण तो कभी नहीं किया।**" परन्तु यह स्वीकार करना पड़ेगा कि **डलहौजी** के प्रदेशों के विलय करने से व्यवस्था बिगड़ गई। उसकी गति बहुत तेज थी और वह सीमा से कुछ अधिक आगे चला गया। उसकी इस नीति ने समकालीन असन्तोष की भावना को एक दिशा दी और **1857 ई.** के आन्दोलन में विद्रोह आरम्भ होने के पश्चात् एक मस्तिष्क का कार्य किया। **1857-58** ई. के विद्रोह का उत्तरदायित्व **डलहौजी** पर ही है।